International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.in
ISSN: 2455-4588
Received: 28-01-2023, Accepted: 14-02-2023, Published: 03-03-2023
Volume 8, Issue 1, 2023, Page No. 36-39

जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

सुदीप कुमार[1], डा. राज कुमार यादव[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय झुनझुनु, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय झुनझुनु, राजस्थान, भारत

सारांश

शिक्षा ज्ञान का वह श्रोत है जिसके माध्यम से अज्ञान रूपी अंधकार स्वतः ही नष्ट हो जाता है। कहा जाता है कि शिक्षा से जड़ता दूर होती है और जीवन उत्कृष्ट बनता है। प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य प्रारम्भिक अथवा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। कार्य संतुष्टि एक जटिल संप्रत्यय है जो बहुत हद तक मनोवृत्ति तथा मनोबल से सम्बद्ध और मिलता–जुलता है। किन्तु सही अर्थ में कार्य संतुष्टि अपने निश्चित स्वरूप के कारण एक ओर मनोवृत्ति से भिन्न है तो दूसरी ओर मनोबल से। समायोजन निंरतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध बनायें रखने के लिये अपने व्यवहार में परिर्वतन करता है।

मूल शब्दः प्राथमिक शिक्षा, कार्य सन्तुष्टि, मनोवृत्ति, मनोबल, समायोजन

शिक्षा का अर्थ क्या यह नहीं है कि विभिन्न समस्याओं का सामना करने के लिए वह आपको समर्थ बनाए। यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का ठीक ढंग से सामना करने के लिए आपको शिक्षित किया जाए। यही शिक्षा है, न कि मात्र कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना, कुछ विषयों का, जिनमें आपकी रूचि बिल्कुल नहीं है, उनका अध्ययन कर लेना। सम्यक शिक्षा वहीं है जो विद्यार्थी की इस जीवन का सामना करने में मदद करें, ताकि वह जीवन को समझ सकें, उससे हार मान न ले, उसके बोझ से दब न जाए, जैसा कि हम में से अधिकांश लोगों के साथ होता है।

प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है– प्रारम्भिक, मुख्य तथा आधारभूत। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य प्रारम्भिक अथवा आधारभूत शिक्षा से है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है।

कार्य संतुष्टि का तात्पर्य व्यवसाय कारक से है दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कर्मचारियों में व्यवसाय से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न कारकों के प्रति उसकी मनोवृत्ति को कार्य संतुष्टि कहते है। व्यवसाय से सम्बन्धित कई विशिष्ट कारक है। जिनमें पारिश्रमिक, पर्यवेक्षण, कार्य–परिस्थिति पदोन्नति के अवसर नियोक्ता के व्यवहार आदि मुख्य है। इन विशिष्ट कारकों के प्रति कर्मचारियों की मनोवृत्ति जिस हद तक अनुकूल होती है, उसी हद तक कार्य संतुष्टि भी सम्भावित होती है।

हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। बचपन में हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। जो जिस सीमा तक जितनें अच्छें ढ़ंग से जीवन संग्राम की इस लड़ाई को लड़ता जाता है। वह उतने ही अच्छे ढ़ंग से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ करना चाहतें है। और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है। परन्तु बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहतें है जिसके लियें हम दिन रात परिश्रम करतें है। उस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नहीं हो पाती हैं। उदाहरण के लियें– एक बालक इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश पाने के लियें तरह–तरह की परीक्षा देता है परन्तु अथक परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नही मिलती है। इस हालात में वह अपने लक्ष्य को ही परिवर्तित कर देता है। तथा बी0एस0सी0 प्रवेश लेकर आगें एम0एस0सी0 तथा प्राध्यापक बनने की बात को पूरा करने के लिये जुट जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद किसी दूसरे क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता व परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एंव परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है। कुछ मनोवैज्ञानिक समायोजन को मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में परिभाषित करते है। इनके अनुसार कोई बालक या व्यक्ति तभी तक समायोजित अनुभव करता है,जब तक उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है और जब इन आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ी हुई उसकी कोशिशों तथा परिस्थितियों की पूर्ति में बाधा पहुँचती है,उसका कुसमायोजित होना प्रारम्भ हो जाता है। कुछ अन्य के द्वारा दी गयी दूसरी परिभाषा समायोजन को एक ऐसी स्थिति के रूप में देखती है जिसमें व्यक्ति की अपने वातावरण के साथ तालमेल बैठता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति अत्यन्त दयनीय प्रतीत होती है। जिसके कारण आज प्रत्येक गाँव व नगर में निजी प्राथमिक विद्यालयों की बाढ़ सी आ गई है।

इन निजी विद्यालयों के खुलने का कारण सरकारी विद्यालयों के अभाव से कहीं अधिक सरकारी विद्यालयों की दशा एवं इन विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या तथा इन विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा है। जिसके कारण लगातार छात्रों की उपस्थिति भी घट रही है।

वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय जो स्ववित्तपोषित है उनमें शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए इन विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों को सरकार ने मानदेय देने का निर्णय लिया था। लेकिन इसे भी खत्म कर दिया गया है।

परन्तु जब तक शिक्षक अपने कत्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगा, अपनी भूमिका से संतुष्ट नहीं होगी और अपने को प्रभावशाली सिद्ध नहीं करेगा तब तक वह शिक्षक के रूप में अपने दायित्वों का सुचारू रूप से निर्वाह नहीं कर पायेगा।

वर्तमान में उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में दो तरह के शिक्षक कार्यरत् है, एक वह जिन्हें सरकार द्वारा वेतन दिया जाता है तथा दूसरे वे जो प्रबन्ध द्वारा वेतन प्राप्त करते है। जिन्हें सरकार वेतन देती है। इन्हें वह प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से नियुक्त किये जाते है।

अतः यह जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि जिन्हें सरकार द्वारा नियुक्ति एवं वेतन दिया जाता है। उनका कृत्य संतोष एवं समायोजन कैसा है तथा जो प्रबन्धन द्वारा नियुक्ति प्राप्त करते है। उनका कृत्य संतोष कैसा है।

समस्या कथन
जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ
प्राथमिक स्तर
प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक के शिक्षा स्तर से है।

शिक्षक
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक से तात्पर्य उस महिला–पुरूष से है जो विद्यालय में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते है।

कार्य संतुष्टि
जब कोई व्यक्ति अपने चुने हुए व्यवसाय या कार्य में सन्तुष्टि का अनुभव करता है। तो इसे कार्य सन्तुष्टि कहते है।

समायोजन
जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं तथा वातावरण के उन कारकों जिनसे उन इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की सही ढंग से संतुष्टि होती है, के बीच एक सन्तुलन बनाए रखता है तब इस प्रक्रिया को समायोजन की संज्ञा देते है।

अध्ययन के उद्देश्य
1. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का अध्ययन करना।
2. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का अध्ययन करना।
3. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का अध्ययन करना।
4. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का अध्ययन करना।
5. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें
1. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन
1. प्रस्तुत अध्ययन जनपद शाहजहाँपुर के ब्लाक जलालाबाद एवं मिर्जापुर तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु कुल 120 शिक्षकों का चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल प्राथमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
रावत (2019): ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको की आकांक्षाओं, व्यवसाय की सत्यता, कार्य संतुष्टि व मूल्य परिपाटी का अध्ययन किया और पाया कि महिला तथा एल0टी0 ग्रेड शिक्षक अन्य शिक्षको की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे। कार्य संतुष्टि का सामाजिक व नैतिक मूल्यों से धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। सी0टी0 ग्रेड शिक्षक, एल0टी0 ग्रेड शिक्षको की अपेक्षा अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट थे। लिंग का कार्य संतुष्टि पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। ग्रेड व व्यवसायिक आकांक्षाओं के मध्य धनात्मक सम्बन्ध था।

दीक्षित (2020): के अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापको के कार्य संतुष्टि के विभिन्न कारको पर लिंग के प्रभाव का विश्लेषण करना था। जिसके अन्तर्गत आन्तरिक पक्ष (शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां) तथा वाह्य संतुष्टि जैसे– वेतन, बोनस तथा अन्य लाभ पर लिंग के प्रभाव को ज्ञात करना था। इस अध्ययन में न्यायदर्श के रू‍प में लखनऊ शहर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको का चयन किया गया। प्रदत्त एकत्रीकरण हेतु स्वंय शोधार्थी द्वारा विकसित पांच बिन्दु लिकर्ट प्रकार का कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों का 'टी' मूल्य तथा प्रतिशतांक ज्ञात किया गया। इसके निष्कर्ष इस प्रकार रहे– 'ए' कारक अर्थात आन्तरिक पक्ष पर महिला व पुरूष सार्थक अन्तर रखते थे। अन्य सभी कारकों पर वे सार्थक रू‍प से भिन्नता नहीं रखते थे। लेकिन फिर भी महिला अध्यापको ने अपने पुरूष सहभागियों की तुलना में अधिक अंक अर्जित किये।

गुप्ता (2020): ने अध्यापको की कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होने माध्यमिक स्तर के 60 शिक्षको पर ''गुप्ता व श्रीवास्तव'' द्वारा निर्मित टीचर्स सैटिस्फैक्शन स्केल तथा ''गुप्ता व शर्मा'' द्वारा निर्मित टीचर्स इफिक्टिवनैस स्केल के उपयोग से यह निष्कर्ष निकाला कि कार्य संतुष्टि के 20 आत्रामों में से केवल 14 आयामों का सीधा प्रभाव उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ता है। शिक्षको को प्रभावित करने वाले आयामों में सहयोगियों व प्रधानाचार्यो से सम्बन्ध, छात्रों से सम्बन्ध वातावरण उपब्धि, स्थायित्व, स्वतन्त्रता आदि महत्वपूर्ण कारक है।

गोस्वामी (2021): के द्वारा विश्वविद्यालय जाने वाली किशोर बालिकाओं के समायोजन की समस्या का अध्ययन करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।
1. उम्र के साथ लड़कियों में समायोजन की समस्या बढ़ती हुई पाई गई।
2. किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक और मानसिक समायोजन के क्षेत्र में कठिनायों का सामना करना पड़ता था जो कि उनके घर विद्यालय और पढ़ाई से सम्बन्धित थी।
3. समायोजन का अध्ययन करना 8 और 9 के किशोर बालिकाओं पर किया गया तो कक्षा 8 की बालिकाओं को अधिक समायोजन की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो कि विद्यालय, घर और संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित थी।

अध्ययन की विधि
प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या
प्रस्तुत अध्ययन में शाहजहाँपुर जनपद के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श
प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा जनपद शाहजहाँपुर के ब्लाक जलालाबाद एवं मिर्जापुर के प्राथमिक स्तर के 120 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन का उपकरण
प्रस्तुत शोध कार्य हेतु डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित 'कार्य संतुष्टि मापनी' तथा डॉ0 एस0के0 मंगल द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ
प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा परीक्षण करने के लिए ऑकड़ों का संग्रह किया गया तथा तत्पश्चात् इसका मध्यमान, मानक विचलन, टी–अनुपात द्वारा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की गयी।

निष्कर्ष
1. शोध परिकल्पना 1 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान तथा मानक विचलन शिक्षकों के समायोजन के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0. 249 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. शोध परिकल्पना 2 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान तथा मानक विचलन महिला शिक्षकों के समायोजन के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.971 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0. 01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
3. शोध परिकल्पना 3 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान तथा मानक विचलन पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.971 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
4. शोध परिकल्पना 4 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान तथा मानक विचलन ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.971 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
5. शोध परिकल्पना 5 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान तथा मानक विचलन शहरी शिक्षकों के समायोजन के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 5.78 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जनपद शाहजहाँपुर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ
इस अध्ययन के द्वारा की कार्य–सन्तुष्टि एवं समायोजन के स्वरूप व निहित तत्वों के प्रति अन्तरदृष्टि विकसित होगी। जिसके फलस्वरूप उनकी समस्याओं का समुचित निदान करने व प्रभावकारी शिक्षा योजना निर्मित करने में सफल हो सकेंगे।
अध्यापन व्यवसाय की सफलता बहुत कुछ शिक्षक के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। जब तक शिक्षक समस्याओं से ग्रसित रहेगा तब तक वह अपने कार्य में संतुष्टि की अनुभूति नहीं करेगा। शिक्षक को अपने कार्य में संतुष्ट होना अति आवश्यक है। वर्तमान शोध के निष्कर्ष इस उद्देश्य की प्राप्ति में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगें।
समय–समय पर इस प्रकार का शोध कार्य अधिक व्यापक आधार लेकर तथा गहनता के साथ किया जाना चाहिए ताकि असंतुष्टि उत्पन्न करने वाले कारकों को उनके प्रथम स्तर पर ही उन्मूलित किया जा सकें।

सुझाव
प्रस्तुत शोध केवल 120 शिक्षकों पर किया गया है। इससे बड़ा न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।
शिक्षकों की अभिक्षमता तथा व्यवसायिक सन्तुष्टि के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
सी0बी0एस0ई0 तथा यू0पी0 बोर्ड के विद्यालय के छात्रों की अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की लाज्जलू प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण (1996) आगरा, उपकार प्रकाशन, 212वॉ अंक, मार्च।
2. राय, पी0एन0 (1999): 'अनुसन्धान परिचय', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
3. अस्थाना, विपिन (2000): मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. गुप्ता, एस0पी0 (2001): आधुनिक मापन और मूल्यांकन, इलाहाबाद, शाखा पुस्तक भवन, विश्वविद्यालय रोड।
5. सिंह, गजराज एवं कामिल्य, चित्रा (2006): 'दर्पण' पश्चिमी क्षेत्र विद्या भारती शिक्षा संसाधन।
6. कार्डोजा, कविथा (2002): पेरेंटल कन्ट्रोल ओवर चिल्ड्रन्स टेलीविजन विविंग एच इण्डिया, साउथ एशिया, 11(2), 135–161।
7. नवाथे आनन्द (2007): रिर्पोटेड डैट इम्पैक्ट ऑफ एडवरटाइजिंग ऑन चिल्ड्रन (टी0वी0 कार्टून्स विद् वाइलेन्स वर्सस विद् नो वाइलेन्स)।

8. के0ई0, ए0जे0, एस0आर0 डालकोस्टा, एट0एल0 (2008): टेलीविजन वियोण्डः चिल्ड्रन विडियो मिडिया इन वन कम्यूनिटी कम्न्यूनीकेशन रिसर्च, 17, 45–64।
9. एट0एल0 (2009): मल्टीमीडिया एप्लीकेशन विद् एनीमेटेड कार्टून्स फॉर टीचिंग साइंस इन एलीमेन्टरी एजूकेशन, कम्प्यूटर एण्ड एजूकेशन, 52(4), 741–748।
10. कबाप्रार (2009): इफैक्टिवनैस ऑफ टीचिंग वाय कान्सैप्ट कार्न्टून्स फ्रॉम द पाइंट ऑफ वियू ऑफ कन्सट्रक्टिव अप्रोच्।
11. रावत (2019), माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको की आकांक्षाओं, व्यवसाय की सत्यता, कार्य संतुष्टि व मूल्य परिपाटी का अध्ययन, एम0जे0पी0 विश्वविद्यालय, बरेली।
12. दीक्षित (2020), प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापको के कार्य संतुष्टि के विभिन्न कारको पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
13. गुप्ता (2020), अध्यापको की कार्य संतुष्टि और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
14. गोस्वामी (2021) विश्वविद्यालय जाने वाली किशोर बालिकाओं के समायोजन की समस्या का अध्ययन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।